Research Paper | Social Science | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 7 | Issue : 7 | Jul 2021

ALPANA MISHRA KA STREE VIMARSH: SAAJHEE DUNIYA KA SWAPN

अल्पना मिश्र का स्त्री विमर्श: साझी दुनिया का स्वप्न

Dr. Sophia Rajan

Associate Professor, Govt Arts & Science College, Tanur, Kerala, India.

ABSTRACT

स्त्री लेखन, स्त्री के सघन सामाजिक सरोकारों का लेखा जोखा है। उत्तर-आधुनिक विकेंद्रण बताते हैं कि 'पाठ' सबका अलग-अलग होता है। स्त्रीत्ववादी पाठ और पुरुषवादी पाठ रचना के टेक्स्ट के भीतर छिपे समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और धर्मशास्त्र को अपने-अपने ढंग से अनूदित और प्रतिष्ठित करते चलते हैं। किसी भी रचनाकार के साहित्य पर समग्रतः विचार करने का अर्थ है उसकी रचनाओं की केन्द्रीय संवेदना को उद्घाटित करना। उसके वैचारिक, भावनात्मक, कलात्मक विकास की क्रमिक ऊर्ध्वगामी अवस्थाओं को चिन्हित करना। अल्पना मिश्र का महत्व इसलिए नहीं कि उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य रचा है, वे केवल इसलिए प्रासंगिक और पठनीय नहीं है कि उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। अल्पना मिश्र की शक्ति इस बात में निहित है कि उन्होंने नारी मन के भीतर झांककर उसके भीतर की परत-दर-परत खोल डाली है। उत्तर-आधुनिक सैद्धांतिकियाँ स्त्रीत्ववादी विमर्श को नए रूप में परिभाषित करती है। नए ग्लोबल जनतंत्र में और नए पूँजीवादी उत्तर-आधुनिक दौर में लिंग-केंद्रित विमर्शों को जगह मिलने लगी। एक नई विखंडनात्मक स्थिति पैदा हो गई है। स्त्रीत्ववादी विमर्श 'पाठ' की जिस विशिष्टता और अद्वितीयता को स्थापित करता है उससे अब तक चली आ रही सौंदर्यशास्त्र हिलने लगी है। किसी भी अनुभव के कथन का 'सार्वभौमिक' प्रति निधान असंभव हो जाता है।

KEY WORDS: वर्चस्ववादी मानसिकता, सार्वभौमिक, फेमिनिज़्म, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, विखंडनात्मक स्थिति, उत्तर-औद्योगिक यथार्थ, उपभोक्ता संस्कृति

'भीतर का वक्त' (२००६) कहानी संग्रह के साथ अल्पना मिश्र का साहित्य जगत में बेआहट प्रवेश एक धमाकेदार गतिविधि है। धमाकेदार इसलिए कि स्त्री के भीतर झांकने का उनका अन्दाज वाकई उल्लेख योग्य है। दरअसल स्त्री मन के भीतर की अतल गहराई तक संपृक्त होने की यह ताकत ही अल्पना की कहानियों को अनंत-ऊर्जस्विता देती है। विपरीत परिस्थितियों के भीतर से सर्जनात्मकता और आत्मविकास की संभावनाओं को चुनकर अपनी मानवीय पहचान के लिए पूरी सामाजिक व्यवस्था को झिंझोड़ डालना २००० के बाद के स्त्री कथा लेखन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसे दुर्भाग्य वश स्त्री-विमर्श का नाम देकर बहस के ऐन बीचोबीच रखा जाता है, लेकिन ज्यादातर हाशिए पर धकेल दिया जाता है। यह सच है कि कालखंड में बाँधकर समय और साहित्य को समग्रता में नहीं समझा जा सकता। किन्तु इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक कथा क्षेत्र में कई अविश्वसनीय गुणात्मक बदलावों के साथ आया है। आज का समय नारी विमर्श के तीसरे चरण का समय माना जाता है। आज की नारी अपने अधिकारों से अपेक्षाकृत अधिक अवगत है। वर्तमान में नारी विमर्श साहित्य की दशा और दिशा बदल रही है। अधिक मात्रा में नारीकृत लेखन सर्जन है। नारी विमर्श पर शास्त्रीय, समीक्षात्मक स्वतन्त्र चिन्तन प्रस्तुत हो रहा है।

स्त्री के अस्तित्व के दृश्यमान हो उठने के पीछे विश्व के स्तर पर उस उत्तर-औद्योगिक यथार्थ का योगदान है जो औद्योगिक सभ्यता और युग के स्थापित जीवन मूल्यों को बदल रहा है। स्त्री का प्रश्न इस अर्थ में एक उत्तर-आधुनिक प्रश्न है। उत्तर-आधुनिक स्थितियों ने उन केन्द्रों को व्यर्थ कर दिया जो मूलतः पुरुष केन्द्र थे। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में फेमिनिस्टों ने लिंग भेदी विचार को नया आयाम दिया और इस प्रकार लिंग संबंधी उत्तर-आधुनिक मुद्दा सामने आया। उत्तर-आधुनिक परिदृश्य का एक हिस्सा होकर स्त्री विमर्श ने संस्कृति के मर्द केंद्रित सामान्य सिद्धांतों को लात मारी है। उससे तमाम सांस्कृतिक विमर्शों की चूलें हिल गई हैं। फेमिनिज्म एक नया उत्तर-आधुनिक सामाजिक क्षेत्र है और उसकी अनदेखी संभव नहीं। नए स्त्री-क्षेत्र का स्वीकार हमारी अर्थ-व्यवस्था के नए चरण का ही स्वीकार है। इस अर्थ में स्त्री क्षेत्र और उत्तर-आधुनिकता की अपनी 'अर्थ-व्यवस्था' है। यानी कि स्त्री केंद्र के जागरण के पीछे ठोस, किन्तु अति-चंचल उत्तर-आधुनिक कारण सक्रिय है। उत्तर-आधुनिक दौर में फेमिनिस्टों ने लिंग भेदी विचार को नया आयाम दिया। इस प्रकार लिंग संबंधी एक उत्तर-आधुनिक मुद्दा सामने आया।

स्त्री विमर्श के जागरण के पीछे दो उत्तर-आधुनिक परिदृश्य सक्रिय हैं। एक स्त्री का दृश्य में अधिक होना और दृश्य में उसकी देह का होना। ये दोनों परिदृश्य अति पूँजीवाद के परिणाम हैं जिन्हें हम उपभोक्ता संस्कृति के उपादानों के रूप में, माध्यमों में

Copyright© 2021, IERJ. This open-access article is published under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 International License which permits Share (copy and redistribute the material in any medium or format) and Adapt (remix, transform, and build upon the material) under the Attribution-NonCommercial terms.

विज्ञापनों में पाते हैं। यह एक नया सांस्कृतिक जन क्षेत्र बन रहा है। इसके निर्माण में उपभोक्ता संस्कृति का योगदान है। नया स्त्री विमर्श, जो नए मीडिया विमर्श के साथ-साथ आया है, में पहली बार स्त्री के अपने अनुभव 'सिद्ध' हो रहे हैं। अब तक का वृत्तान्त 'मर्द' का ही था। अब तक की भाषा मर्द की भाषा थी। इतिहास भी उसी का था। देह की उत्तर-आधुनिक उपस्थिति प्रचलित सांस्कृतिक मर्दवादी दुनिया को किस तरह तोड़ती है यह देखना है। यहीं से उत्तर-आधुनिक कथा बनती है। यही वे सांस्कृतिक नए रूप है जहाँ नए अनुभव बनते हैं।

अल्पना मिश्र का महत्व इसलिए नहीं कि उन्होंने विपुल मात्रा में साहित्य रचा है, वे केवल इसलिए प्रासंगिक और पठनीय नहीं है कि उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। अल्पना मिश्र की शक्ति इस बात में निहित है कि उन्होंने नारी मन के भीतर झांककर उसके भीतर की परत-दर-परत खोल डाली है। अल्पना मिश्र की सबसे बड़ी शक्ति है 'स्त्री विमर्श' को पुरुष एजेंडे से मुक्त करना। संग्रथन पत्रिका(केरल) को दिए साक्षात्कार में वे कहती हैं – "स्त्री विमर्श, स्त्री जीवन की समस्याओं, उसकी पीड़ा, यातना, शोषण और पितृसत्ता द्वारा किया गया अनुकूलन इत्यादि का सैद्धांतिक पक्ष है। वह पितृसत्ता की वर्चस्ववादी मानसिकता, उसके द्वारा स्त्री को नियंत्रित करने के तरीकों का विरोधी है। पुरुष का विरोधी नहीं है। एक संतुलित समाज में पुरुष से सहयोगी भूमिका की अपेक्षा होती है।"[1] अल्पना मिश्र ने किसी सैद्धांतिक विचार धारा से अपने को कभी नहीं जोड़ा। उनके कथा लेखन में नारीवाद मानसिकता के लक्षण सीधे-सीधे नहीं दिखलाई पड़ते। अल्पना का लेखन स्त्री के भीतर सांस लेते 'मनुष्य' को पहचानने की कोशिश करता है। उन्होंने जहाँ मनुष्य मन विशेषकर स्त्री मन के अन्तस् में झांका वहीं उसके बाहरी परिवेश को भी रेखांकित किया। लेखिका एक स्त्री होने के नाते स्त्री मन के संत्रास, उलझन आदि से काफी परिचित हैं। उसकी संवेदना को अपनी संवेदना का बाना पहनाकर उन्होंने अपनी कथाओं के द्वारा प्रस्तुत किया। नारी अस्मिता के भिन्न धरातलों की पड़ताल करते अल्पना का कथा संसार भारतीय समाज में स्त्री प्रश्न का कोलाज सा रचते दीखते हैं। जहाँ उनकी कहानियाँ स्त्री-सच का बेबाक पहचान है, वहीं उनका उपन्यास का कथा वृत्तान्त स्त्री-अस्मिता के पार जाकर 'अपने होने का अर्थ' ढूँढता है। उनका लेखन स्त्री मानस के तलघर को बिना किसी छेड़छाड़ के सामने रखता है जहाँ व्यवस्था के विरोध में उफनती हुँकारें हैं।

अल्पना के कथाकार के सम्मुख प्रमुख है संवेदना का हरहराता समंदर। अल्पना की स्त्री का गढ़त पारंपरिक स्त्री से ज़रा भी भिन्न नहीं है। वही दब्बू वही असुरक्षित, वही शंकालू। तभी रोहिणी अग्रवाल लिखती हैं – "बेशक नई स्त्री की बोल्ड छवि को प्रस्तुत नहीं करती अल्पना, जिसकी झलक मीडिया और मेट्रो संस्कृति में भरपूर देखने को मिलती है।"[2] सच तो यह है कि समूचा भारत न मेट्रो संस्कृति में निबद्ध है न मीडिया से जीवनी शक्ति पाता है। परम्परा और आधुनिकता की आपसी टकराहट को स्त्री देह और मानस दोनों स्तरों पर झेल रही है। आज के स्त्री के ऊपर परंपरा के वर्जना युक्त दबाव है और दूसरी तरफ आधुनिकता के डिमांडिंग आग्रहों के कारण उसके पास पैर टिकाने को जमीन नहीं। अल्पना बेपरवाह होकर सहज **ढंग** से इसी स्त्री की दास्तान कहे जा रही है। बिना किसी शैल्पिक आडंबर के बिना जटिलता के।

सन् 2006 में अल्पना मित्र का प्रथम कहानी संग्रह 'भीतर का वक्त' प्रकाशित हुआ जिसे लेखिका ने अंधेरे से जूझती स्त्रियों के अनवरत प्रयास और अदम्य इच्छाओं के नाम समर्पित किया है। कहानी संग्रह में 'उपस्थिति', 'भय', 'कथा के गैर ज़रूरी प्रदेश में', 'अंधेरी सुरंग में टेढ़ें-मेढ़े अक्षर', 'बेतरतीब', 'भीतर का वक्त' इस प्रकार छः कहानियाँ सम्मिलित हैं। कहानियों में एक अलग अन्दाज है। सच्चे अर्थों में अल्पना इन कहानियों के द्वारा स**घ**नता और सहजता के साथ मानवीय सम्बन्धों और स्थितियों की बाहरी दुनिया से स्त्री के भीतर को देखती है। स्त्री के इस्तेमाल हो जाने की विवशता पर मर्मघात किया है। नारी जीवन को छूने वाली कई एहम मुद्दों पर प्रकाश डाला गया है। नारी मन के गोपनीय से गोपनीय रहस्यों का पर्दाफाश किया है वो भी मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन न करके।

स्त्री लेखन में विशेषकर उत्तर-आधुनिकता के दौर के स्त्री लेखन में उभरती नई स्त्री-छवि देह को पाप-पुण्य, शील-अश्लील, मर्यादा-अमर्यादा जैसी गढ़ी गई संरचनाओं से मुक्त कर विशुद्ध बायॉलॉजिकल तथ्य के रूप में देखती है। अल्पना मिश्र स्त्री के इसी जैविक अनु**भ**वों का पर्दाफाश अपनी कहानियों में करती हैं। इस नई स्त्री से मर्दवादी स्त्री-पुरुष सारा समाज खौफजदा है। लेकिन सच तो यह है कि अल्पना मिश्र की कहानियाँ जिस सघनता और सहजता के साथ सम्बन्धों और स्थितियों की बाहरी दुनिया से 'भीतर' को देखती है वह आज के स्त्री-मन में हो रहे बड़े परिवर्तन की ओर संकेत करते हैं। आज की स्त्री अपनी लैंगिक वर्जनाओं की सीमा को **लां**घकर अपने व्यक्तित्व की खोज कर रही है और यह खोज बौद्धिक स्वावलम्ब की ओर उन्मुख है। कृष्णा सोबती 'भीतर का वक्त' के आमुख में लिखती हैं – "स्त्री की पालतू रस परस मुद्रा और इस्तेमाल हो जाने की विवशता पर मर्माघात करने की अद्भुत क्षमता अल्पना में मौ**जू**द है। हम अल्पना से उस गहरी अन्तर्दृष्टि की भी अपेक्षा करते हैं जो स्त्री की जीविका और आर्थिक स्वतंत्रता के नये संवेदन संस्कार को भी अभिव्यक्त करेगी।"[3] अल्पना का स्त्री विमर्श इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि हार्दिकता और आस्था के बिना प्रेम के आंतरिक स्वरूप का साक्षात्कार नहीं किया जा सकता। उनकी कहानी 'उपस्थिति' में इसी तथ्य को इसी दर्दनाक सत्य को उजागर किया गया है। पति-पत्नी एक ही घर में रहते हुए भी अजनबी। हाऊस वाइफ पत्नी डिप्रेशन का शिकार हो जाती है। इतनी डिप्रेसड की एक मक्खी से बातें करना शुरु कर देती है। कथा नायिका काबेरी के ही शब्दों में – "वे बन्द दरवाजा थे। मुख्य दरवाजा में भीतर से घुमड़कर उन तक जाती थी, सिर पटकती और लौट आती।"[4] पति-पत्नी के बीच का अजनबीपन काफी खौफनाक होता है। दम घुटने लगता है। दम घुटते दाम्पत्य संबंधों को अल्पना मिश्र समय-समय पर

रिपेयर करने की सलाह देती है। अल्पना के मुताबिक 'हाऊस वाइफ' बनना 'कुछ भी बन' जाना नहीं होता। डिप्रेशन की शिकार हाऊस वाइफ की दर्द भरी दास्तान है अल्पना की 'उपस्थिति' कहानी। 'भय' कहानी नारी के उस भय से जुड़ा है जो अबोरशन के रूप में भयानक आकार ग्रहण कर लेता है। महीने के उन चार दिनों में दाग लगने का 'भय' जो लड़की को एक उम्र के बाद हमेशा सताता है। नारी की शारीरिक जैविक अनुभवों का खुलापन हम देख सकते हैं। 'भय' कहानी से ही – "सन्देह, हर जगह सन्देह। इस सन्देह-वाली बात पर मुझे कुछ याद आता है और में फिर से भरसक गरदन मोड़कर अपनी कमर के पीछे का कुर्ता देख रही हूँ – कुछ लगा तो नहीं ?"[5] बच्चा गिरने(अबोरशन) का हादसा, खून से लथपथ होने का एहसास **इ**स प्रकार के जैविक अनुभवों का खुलापन उत्तर आधुनिक दौर में सामने आने लगी। एक ज़माना था जब ऐसी बातों का जिक्र साहित्य में नहीं होता था। गोपनीय रखा जाता था। अबोरशन औरत के लिए क्या **मा**यने रखता है। उसे मानसिक एवं मनोवैज्ञा**नि**क तौर पर वह किस तरह प्रभावित करता है इस ओर उनका 'भय' कहानी इंगित करता है।

अल्पना स्त्री की आकांक्षाओं एवं इच्छाओं को नया रंग देती हैं। उनका मानना है कि स्त्रियों की भी इच्छा होती है कि कोई प्यार से उन्हें दे**खें** । आँखों-आँखों से मिलाकर ठहर जाएें। देह के भीतर उगी प्रेम का जिक्र तो अल्पना करती है लेकिन समाज ऐसी स्त्री **को** किस नजर से देखती हैं इस पर उनका वक्तव्य कुछ इस प्रकार है – "लोग, जो उनके इर्द-गिर्द हैं, कभी सहन नहीं कर पाऐंगे कि एक औरत देह की ऐसी इच्छा की बात कर रही है। भला कैसी है वह स्त्री ? चरित्र हीन ? वेश्या ?"[6] 'कथा के गैर जरूरी प्रदेश में' कहानी की नायिका जो कि अपने स्त्री **लं**पट पति से तंग आ चुकी है अपनी आकांक्षाओं का बयान इस प्रकार करती है – "यह देह, यही आधार है, मन की अतृप्ति इसी में उठा-पटक करती इसे ही अशक्त और बीमार बना देती है। मन की उछल-उछल कर उठती तरंगों को समेटकर कहाँ रख दें ? कैसे नकार दूँ भला अपनी ही देह ?"[7] 'भीतर का वक्त' कहानी में प्रसव के तुरन्त बाद माँ के अनुभवों पर प्रकाश डालती है -- "मेरा दूध गिरा जा रहा था। ब्लाउज़ भीग रहा था। अपनी साड़ी ब्लाउज के बीच फँसाकर मैंने दूध गिरने से रोकने की कोशिश की। यह मेरा पहला दूध था, जिसे डाक्टर के अनुसार बच्चे को पीना ही चाहिए।"[8] अल्पना 'भीतर का वक्त' कहानी में अपील करती है स्कूलों से कि वे कृपया अपने पाठ्यक्रम में बच्चा पैदा करने जैसे निहायत ज़रूरी बातों को शामिल करें। शादी, बच्चा पैदा होने और उसके बाद के तमाम सच। 'भीतर का वक्त' कहानी से ही – "मैं रुक नहीं सकती थी। रुकना खतरनाक लग रहा था। ब्लीडिंग होते जाने के कारण चिन्तित भी थी। मुझे ठीक से पता नहीं था कि ऐसा होने पर क्या हो सकता है ? बस इतना समझ आया था कि खून निकल रहा है तो बच्चा मर सकता है। उस वक्त मुझे अपने बॉयोलॉजी न पढ़े होने का कितना अफसोस हुआ, कह नहीं सकती। लड़कियों को शरीर विज्ञान पढ़ाना कॉम्पलसरी करना चाहिए। शादी, बच्चा पैदा होने और उसके बाद की तमाम सच... मैं स्कूलों से अपील करती हूँ कि वे कृपया अपने पाठ्यक्रम में इन निहायत ज़रूरी बातों को शामिल करें।"[9] इक्कीसवीं सदी में भी भारतीय स्त्री की हालत कुछ इस तरह है। उसे अपने शरीर विज्ञान का ही पर्याप्त ज्ञान नहीं। स्त्री मुक्ति एवं फेमिनिज़्म किस हद तक इस यथार्थ को बदल सकी है ?

अल्पना स्त्री विमर्श को केवल देहवादी विमर्श मानने से इन्कार करती हैं। अपने साक्षात्कार में उन्होंने इस विषय पर यों प्रतिक्रिया व्यक्त की है -- "स्त्री-विमर्श के पुरोधा जो लोग बनने चले थे, उन्होंने स्त्री विमर्श को देह विमर्श की गलियों में खूब भटकाया। उन्होंने यह नहीं सोचा कि पढ़ी-लिखी और आत्म-निर्भर होती स्त्री-जीवन के व्यावहारिक पक्ष को समझने लगेगी और बहुत जल्द इस भ्रम से निकल जाऐगी, यही हुआ भी। देह पर निर्णय की स्थिति भी तभी बन पाती है जब स्त्री चेतना संपन्न, पढ़ी लिखी और आत्म-निर्भर हो, लिव इन रिलेशनशिप की स्थिति भी तभी बनती है।"[10]

सन् 2008 में अल्पना मिश्र का दूसरा कहानी संग्रह '**छावनी** में बेघर' प्रकाशित हुआ। 'मुक्ति प्रसंग', 'मिड डे मील', 'तमाशा', 'बेदखल', 'जिम्मी के सपने', 'लिस्ट से गायब', 'इस जहाँ में हम' और 'छावनी में बेघर' नामक आठ कहानियाँ इसमें सग्रहीत हैं। 'मुक्ति प्रसंग' स्त्री विमर्श का एक नया आयाम प्रस्तुत करती है। कामकाजी औरतों को अन्दर और बाहर के दबावों को झेलना पड़ता है। बसों एवं सार्वजनिक स्थानों पर बुर्जुग पुरुषों की काम लो**लु**पता का पर्दाफाश इसमें बखूबी किया गया है। वे लिखती हैं स्त्रीयों की बस यात्रा पर -- "एक बार बस में चढ़ जाएँ और भाग्यवश या चलिए कर्मवश कह लीजिए अर्थात् छीनते-झपटते हुए यदि किनारे खिड़की के पास की सीट मिल जाए और यदि भाग्यवश उनके बगल में कोई बुजुर्ग(सभ्य भाषा में वे बुजुर्ग कह देती हैं, पर इस बुजुर्ग से उनका तात्पर्य कमीने अधेड़ों, कुंठित **बुढ्ढों** या फिर सेक्सियाये आदमियों से होता है) बैठ न पाये या फिर कोई दुष्ट जवान बैठते-बैठते रह जाय तो इसे वे कर्म से इतर ही मानेंगी।"[11] 'मुक्तिप्रसंग' में वे प्यार और पालतूपन के अजीब रिश्ते पर विचार करती हैं -- 'क्या प्यार और पालतूपन एक ही चीज है या दो बिल्कुल अलग-अलग चिज़े ? पालने वाले के लगाव और स्वतः स्फूर्त प्यार जैसी ऊर्जा में वैसे ही अन्तर है, जैसे शादी और प्यार में जैसे शादी में छिपा है पालतूपन और मोह। तो क्या स्त्री एक पालतू जानवर है ?" [12]नौकरी पेशा स्त्रीयों को आज भी अपनी आय पर अधिकार नहीं। इस सत्य की ओर भी वे प्रकाश डालती हैं। स्त्री मुक्ति आन्दोलन ,अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष, वुमेन्स डे वगैरह कितनी भी गुजर जाऐं अगर स्त्री को अपने कमाए पर निर्णय लेने का हक नहीं तो क्या फायदा ? वे लिखती हैं -- "वैसे भी औरत के हाथ में पैसा रखने से औरत बिगड़ जाती है। (हवाले से **डॉ** साहब) तो जब से उन्हें इस भाग दौड का इनाम मिलना शुरु हुआ अर्थात् वेतन, तो पहले दो चेक डॉ साहब ने अपने एकाउंट में जमा करवाये, लेकिन तीसरे महीने विद्यालयी अनिवार्यता के चलते उन्हें अपना एकाउंट ऋषिकेश में खोलना ही पड़ा। उनके

वेतन से सम्बन्धित सारे मामले डॉ साहब ही देखा करते। यहाँ तक की सारी इन्कमटैक्स बचत ज्वॉईंट होती। सोचा था उन्होंने, इस नौकरी में आते ही उनके दुःख दारिद्रय के दिन समाप्त हो जाऐंगे। (धूरे के भी दिन फिरते हैं) पर कहाँ ? डॉ साहब इतने चुपचाप उनकी नौकरी पर कुंडली मारकर बैठे कि वे देखती रह गयीं। अगर पैसा न दें तो घर में टेंशन, पारिवारिक अशान्ति का कारण पैसा ? छिः वे कभी सोच भी नहीं सकती, लो ले जाओ पैसे, पर शान्ति बने रहने दो, पर शान्ति किसकी ? डॉ साहब की या उनकी ?"[13]

अल्पना जी की 'तमाशा' कहानी आज की कामकाजी नारी की वास्तविक अवस्था का चित्रण करती है । औरत जब पढ़ने - लिखने, या फिर नौकरी के वास्ते घर के बाहर कदम रखती है तो उसे इस प्रकार के ताने पुरुषों द्वारा सुनने पड़ते हैं -- "औरत होने का नाजायज फायदा लेती हैं ये लोग। हाँ, नहीं तो। तमाशा बना रखा है। हाँ। कहिए इन्तज़ार करें। यह भी तो इंटरव्यू है। किसने मज़बूर किया है कि आएँ पढ़ने ? क्या ज़रूरत है चौका-चूल्हा छोड़कर आने की ?घर का सत्यानाश अलग करती हैं **ये** लोग ?" औरत का मन, चिन्ता हमेशा घर-परिवार बच्चों से जुड़ा रहता है। तभी नौकरी पर या पढ़ाई पर वे पूर्ण रूप से तल्लीन नहीं हो पाती । घर की परेशानियाँ पुरुषों को उस तरह नहीं हिलाती जिस तरह औरतों को। तभी तो वे पूछती हैं -- "खुदा को हाजिर-नाजिर जानकर कहिए कि आपने क**भी** सुना है – इंटरव्यू में लड़के अपना इंटरव्यू सिर्फ इसलिए जल्दी करवाना चाहते हैं कि घर पर उनके छोटे बच्चे अकेले हैं या कि पेट **फू**ला है (गर्भवान) तबीयत घबरा रही है, उल्टी- उल्टी जैसा लग रहा है या कि सबेरे से कुछ खाये नहीं है, पेट के बच्चे पर असर न पड़ जाए। या कि अस्पताल में आदमी **भ**र्ती है।"[14] पुरुषों के लिए ये छोटी- छोटी बातें हैं जिसपर वे अधिक ध्यान ही न देते। तो ये मानसिक धरातल पर नारी और पुरुष में जो फर्क है उसे लेखिका एक एहम मुद्दा मानती हैं। 'रोती हुई औरतें, और भी ज्यादा औरत होती हैं।' बेशक नई स्त्री की बोल्ड छवि नहीं प्रस्तुत करती अल्पना। वे चाहती हैं कि पुरुषों की दुनिया में स्त्री को स्वावलम्बी होना ही है – मानसिक तौर पर भी और रोजमर्रा की ज़रूरतों में भी। रोहिणी अग्रवाल अल्पना जी की नारी विमर्श पर यों लिखती हैं - अल्पना स्त्री की असुरक्षा और तनाव को ही 'मुखर नहीं करतीं, 'तनाव' और 'असुरक्षा' जैसी निरीह कातरताओं को हथियार बना पुरुष व्यवस्था की दरिदगी को बेनकाब करती हैं। स्त्री को तमाशा बनाकर उसकी बेचारगी और कमजोरी का 'स्वाद' और 'लाभ' लेने वाले पुरुष समाज को आड़े हाथों लेती हैं वे। रोहिणी अग्रवाल अल्पना मिश्र के लेखन को समकालीन स्त्री लेखन से जोड़ते हुए लिखती हैं - "दरअसल स्त्री-कथा लेखन स्त्री की ओर से बेहद असुविधाजनक मानवीय सवालों को ही उठाता है जिस कारण वह विरोध, विद्वेष और तिरस्कार का शिकार होता रहा है। ये सवाल औरतों की संकुचित बुद्धि और संकीर्ण दुनिया को प्रतिबिंबित नहीं करते, इन सवालों को नजरंदाज कर प्रत्याक्रमण करती द्वेषपूर्ण पितृसत्तात्मक व्यवस्था की ओर उंगली उठाते हैं। तमाम रेशमी आवरणों को हटाकर मृदु-शालीन चेहरे के पीछे **झां**कते बर्बर पशु के रूप में कौन अपना परिचय पाना चाहेगा ? जाहिर है ऐसे स्त्री-विमर्श का विरोध होगा ही।"[15] स्त्री शोषण के प्रश्नों पर विचार करते हुए अल्पना मिश्र कल्पना पन्त जी से अपनी साक्षात्कार में कहती हैं -- "पूँजीवादी सोच अपने मुनाफे को सबसे आगे रखती है, वह सामन्ती सोच से बनी, स्त्री को वस्तु समझे जाने की मनोवृत्ति को उकसाती है और उसका उपयोग बाजार की उत्तेजना बढ़ाने में, अपने हित में करती है। इस तरह ये सब मिलकर स्त्री को विकास की सहज स्थितियों से और बुद्धि के बेहतर इस्तेमाल की दिशा में बढ़ने से भी रोकते हैं, उस पर अपनी पकड़ बनाये रखते हैं और सहज मानवीय गरिमा के साथ उसका जीना मुश्किल बनाते हैं।"[16]

सन् 2012 में अल्पना मिश्र का तीसरा कहानी संग्रह 'कब्र भी कैद औ जंजीरें भी' प्रकाशित हुआ । इस कहानी संग्रह में कुल नौ कहानियाँ संग्रहीत हैं -- 'गैरहाजिरी में हाजिर', गुमशुदा, राहगुज़र की पोटली, महबूब जमाना और जमाने में वे, उनकी व्यस्तता, 'मेरे हमदम मेरे दोस्त', सड़क मुस्तकिल, पुष्पक विमान और 'ऐ अहिल्या'। मनुष्यता के क्षरण की विराट अमानुषिक सच्चाइयों के बरक्स विकसित होता हुआ लेखिका का कथा संसार इस भयावहता के सामने मामूली लोगों की निह**त्थी** लड़ाइयों, सपनों और कोशिशों में शामिल होता है। यथार्थ से करीबी जुड़ाव को अपेक्षित तटस्थता के सत्य रचनात्मक पाठ में बदल देने का लेखिका का संघर्ष नए अनुभव क्षेत्रों में धँसने की चुनौती लेता है। वैयक्तिक, निर्वैयक्तिक के प्रचलित विधानों से बेफिक्र लेखिका के लिए सबसे भरोसेमंद चीज़ स्वयं जीवन है जिसके स्पंदित रसरत भरे अनुभवों को बृहत्तर यथार्थ से उसकी अन्तर्क्रिया समेत उठाना और दर्ज करना उसके लिए ज़रूरी हुआ है।

स्त्री के ऊपर हो रहे ज़ुल्म, दहेज हत्याऐं, छद्म आधुनिकता, स्त्री शोषण से जुड़ी घटनाऐं अल्पना की कहानियों के केन्द्र में हैं। उनकी कहानियाँ आलंकारिक नहीं हैं, वे उत्पीड़न के खिलाफ मानवीय आन्दोलन का पक्ष रखती हैं। फ्लैप पर ज्ञानरंजन जी ने ठीक लिखा है कि 'अल्पना अपनी कहानियों के लिए बहुत दूर नहीं जाती, निकटवर्ती दुनिया में रहती हैं।' 'उसकी व्यस्तता' शीर्षक कहानी में लेखिका आ**धु**निक समय में मौजूद मध्ययुगीन बर्बरता के नए चेहरे से पहचान कराती है। यह एक ट्रैजिक अन्त वाली कहानी है जिसे नाटकीय और स्थूल होने से लेखिका ने बचाया है। वस्तुतः कथ्य की दृष्टि से यह कहानी एक बेहद आजमाए गए या कि खंगाल लिए गए विषय पर केन्द्रित है। ससुराल में नवब्याहता का उत्पीड़न जैसा कथ्य है मगर अल्पना मिश्र इसे नए डिटेल्स के साथ विकसित करती हैं और एक विलक्षण प्रतिभाशाली आजाद लड़की के ससुराल में यातनापूर्ण हश्र को गहरे संकेतों में उभारती हैं। मनुष्यता के क्षरण की विराट अमानुषिक सच्चाइयों के बरक्स विकसित होता हुआ लेखिका का कथा-संसार इस भयावहता के सामने मामूली लोग की निहत्थी लड़ाइयों, सपनों और कोशिशों में शामिल होता है । यथार्थ से करीबी जुड़ाव को अपेक्षित

तटस्थता के साथ रचनात्मक पाठ में बदलने में अल्पना सफल होती है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि अल्पना मिश्र हिन्दी कथा साहित्य समाज में अनिवार्य रूप से शामिल हैं । उनका कहानी लेखन निश्चय ही स्थायी दूरियों तक जाऐगा। आ**ज** पाठक और कथाकार के बीच की जो दूरी है वो कुछ अधिक ही बढ़ती जा रही है लेकिन अल्पना मिश्र की कहानियों में यह दूरी नहीं मिलेगी । उनकी कहानियाँ आलंकारिक नहीं हैं, वे उतपीड़न के मानवीय आन्दोलन का पक्ष रखती हैं और इस तरह सामाजिक कायरता से हमें मुक्त कराने का रचनात्मक प्रयास करती हैं। अल्पना मिश्र की स्त्री की गढ़त पारंपरिक स्त्री से ज़रा भी भिन्न नहीं। वही दब्बू, वही असुरक्षित, वही **शं**कालू – आत्मदया, आत्महिंसा और आत्मनकार के दायरों को छूती साठ- सत्तर के दशक की स्त्री सरीखी । इस प्रकार के आक्षेप भले ही अल्पना मिश्र के स्त्री पर लगाए जाऐं पर हैं तो वे सच्चाई ही। आज का यथार्थ ही उनकी स्त्री पात्रों में दिखलाई देता है। सच तो यह है कि स्त्री की असुरक्षा एवं तनाव को ही मात्र अल्पना मिश्र 'मुखर' नहीं करती। स्त्री की 'असुरक्षा' एवं 'तनाव' जैसे निरीह कातरताओं को वे हथियार बनाती हैं, जिसके बल पर वे पितृसत्तात्मक व्यवस्था की दरिंदगी को बेनकाब करती हैं। पुरुष की रुग्ण मानसिकता पर वे निरन्तर प्रहार करती हैं।

संदर्भ:

I. सोफिया राजन. (२०१४). स्त्री की स्वतंत्रता विवेक बुद्धी के साथ जुड़ी होती है. संग्रथन, फरवरी २०१४,पृ सं ४५

II. रोहिणी अग्रवाल. (२०११):स्त्री लेखन स्वप्न और संकल्प; (प्रथम सं), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ सं229

III. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पेपर बेक

IV. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं 19

V. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं 29

VI. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं63

VII. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं64

VIII. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं123

IX. अल्पना मिश्र (२००६) भीतर का वक्त; (द्वितीय संस्करण),भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं127

X. सोफिया राजन. (२०१४). स्त्री की स्वतंत्रता विवेक बुद्धी के साथ जुड़ी होती है. संग्रथन, केरल, फरवरी २०१४,पृ सं 45

XI. अल्पना मिश्र (२००८) छावनी में बेघर (द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं 1

XII. अल्पना मिश्र (२००८) छावनी में बेघर;(द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं 16

XIII. अल्पना मिश्र (२००८) छावनी में बेघर;(द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं 16-17

XIV. अल्पना मिश्र (२००८) छावनी में बेघर;(द्वितीय संस्करण), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, पृ सं51

XV. रोहिणी अग्रवाल. (२०११):स्त्री लेखन स्वप्न और संकल्प;(प्रथम सं), राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृ सं230

XVI. संवेद-सृजनात्मकता की नयी पौध-2 ,युवा लेखिका अल्पना मिश्र से कल्पना पंत की बातचीत ,पृ 62,मार्च 2013